

# Diwali Puja - Sahajayog Ki Shuruvat

Date : 29th October 1995  
Place : Nargol  
Type : Puja  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 10
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	11 - 15

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

ये तो हमने सोचा भी नहीं था, इस नारगोल में २५ साल बाद इसतने सहजयोगी एकत्रित होंगे। जब हम यहाँ आये थे तो ये विचार नहीं था कि इस वक्त सहस्रार खोला जाए। सोच रहे थे कि अभी देखा जाय कि मनुष्य की क्या स्थिति है। मनुष्य अभी भी उस स्थिति पर नहीं पहुँचा जहाँ वो आत्मसाक्षात्कार को समझें। हालांकि इस देश में साक्षात्कार की बात अनेक साधू-संतों ने सिद्ध की है और इसका ज्ञान महाराष्ट्र में तो बहुत ज्यादा है कारण यहाँ जो मध्यमार्गी थे जिन्हें नाथ पंथी कहते थे, उन लोगों ने आत्मकल्याण के लिए एक ही मार्ग बताया था; आत्मबोध का, खुद को जाने बगैर आप कोई भी चीज़ प्राप्त नहीं कर सकते हो, ये मैं भी जानती थी। लेकिन उस वक्त जो मैंने मनुष्य की स्थिति देखी वो बहुत विचित्रसी थी। वो जिन लोगों के पीछे भागते थे उनमें कोई सत्यता नहीं। उनके पास सिवाय पैसे कमाने के और कोई लक्ष्य नहीं था और जब मनुष्य की स्थिति ऐसी होती है कि जहाँ वो सत्य को बिल्कुल ही नहीं पहचानता उसे सत्य की बात कहना बहुत मुश्किल है और लोग मेरी बात क्यों सुनेंगे? बार-बार मुझे लगता था कि अभी और भी मानव को भागना चाहिए। किन्तु मैंने देखा कि कलयुग की बड़ी भोर यातनायें लोग भोग रहे हैं। एक तो पूर्वजन्म में जिन लोगों ने अच्छे काम किये थे, उन लोगों को भी वो लोग सता रहे थे। जिन्होंने पूर्वजन्म में बुरे कर्म किये थे। उसमें कुछ ऐसे भी लोग थे जो पूर्वजन्म के कर्मों के कारण बहुत त्रस्त थे, तकलीफ में थे और कुछ लोग ऐसे थे कि जो वही पूर्वजन्म के कर्म लेकर के राक्षसोंसे जैसे संसार में आये और वो किसी को छलने में, सताने में, उसकी दुर्दशा करने में कभी भी नहीं हिचकिचाते थे। तो दो तरह के लोगों को मैंने देखे खास। एक वो जो पीड़ा देते हैं और दूसरे जो पिड़ीत हैं।

अब ये सोचना था कि इसमें से किसकी ओर नज़र करें। जो लोग पीड़ा देते थे वे बहुत अपने को सोचते थे कि 'मैं तो बहुत ही सम्पूर्ण इन्सान हूँ।' उनमें तो ये कल्पना ही नहीं थी कि ये दूसरों को तकलीफ दे रहे हैं, परेशान कर रहे हैं। और दूसरे जो लोग पीड़ित थे वो बर्दाश्त कर रहे थे, शायद मजबूरी की वजह से हो, या उनको कभी भी ये मालूम नहीं था कि इस तरह की जो व्यवहार करता है उसका प्रतिकार करना चाहिए। उसका विरोध करना चाहिए। उस वक्त यही सोच रही थी कि मनुष्य कब ये सोचेगा कि 'हमें बदलना है, हमारे अन्दर एक परिवर्तन लाना है।' क्योंकि दोनो ही अपनी तरफ से खुद को समझा बुझाकर चुके थे। कुछ लोग ज्यादा तकलीफ देते थे और कुछ लोग कम और कुछ लोग ज्यादा तकलीफ बर्दाश्त कर रहे थे और कुछ लोग कम। ऐसी समाज की स्थिति थी। चाहे वो भगवान के नाम पर हो, चाहे वो राष्ट्र के नाम पर हो और चाहे वो राजनैतिक हो या जिसे कहते हैं इकोनोमिकल। किसी की गरिबी तो किसी की बहुत अमिरी।

इस प्रकार, इस देश में एक तरह की धलना चल रही थी। जिसको कि मैं समझती थी कि जब तक मनुष्य बदलेगा नहीं, जब तक वो अपने को पहचानेगा नहीं, जब तक वो अपने गौरव और अपनी महानता को पायेगा नहीं तब तक वो ऐसे ही काम करता रहेगा। ये सब मेरे दिमाग में था ही, बचपन से ही और मैं ये सोच रही थी कि इस

मनुष्य को समझना जरूरी है। तो पहले तो मैंने मनुष्यों का बहुत अभ्यास किया, तटस्थ रहकर, साक्षी रूप रहकरके मैंने समझना चाहा कि मनुष्य क्या है, पिछले क्या क्या दोष है। कौनसी कौनसी खराबी हैं और किसलिए वो ये ऐसे सोचता है। तब उस नतीजे पे मैं पहुँची कि मनुष्य के अन्दर एक तो या तो अहंकार बहुत ज्यादा है और या तो उसके अन्दर में प्रति अहंकार जिसे हम कहते हैं कि कंडिशनिंग। इन दोनों की वजह से उसके अन्दर में सन्तुलन नहीं, बैलन्स नहीं। जब तक सन्तुलन नहीं आयेगा तब तक कुण्डलिनी उठेगी कैसे? वो भी एक बड़ी भारी चीज़ है।

लेकिन जब मैं यहाँ नारगोल में आयी तो वो कुछ विचित्र कारणों के कारण। एक बहुत दुष्ट राक्षस यहाँ पर एक अपना शिबिर लगाये बैठा था और हमारे पति को कह कहकर भेजा है कि उनको जरूर भेजिए, जरूर भेजिए। मुझे वो आदमी जरा भी ठीक नहीं लगा। फिर भी पति के कहने से मैं आयी और शायद जिस बंगले में अभी रह रही हूँ, शायद उसी में, .....वास्तव में वहीं रहे थे। उससे पहले दिन की बात है कि मैं जब एक पेड़ के नीचे बैठे देख रही थी उनका तमाशा तो मैं हैरान हो गयी थी कि ये महाशय सबको मन्त्रित करके मेसमराज्ड कर रहा था। कोई लोग चीख रहे थे। कोई लोग चिल्ला रहे थे। तो कोई लोग कुत्ते जैसे भौंक रहे थे तो कोई जो है शेर जैसे दहाड़ रहे थे। मेरी समझ में आ गया कि ये इनकी पूर्वयोनी में ले जा रहा था और इनके जो कुछ भी चित्त चेतित है, उसे हम कहते हैं सबकॉन्शस माइंड, उसका जगा रहा था, तब मैं, घबरा गयी। मैंने ऐसे झूठे लोगों को भी पहले देखा था कि ये करते क्या है, ये तो पता होना चाहिए न कि ये करते क्या हैं, किस तरह से क्या धंधा करते हैं। और इन में मैंने एक चीज़ देखा कि ये बड़े भयभीत लोग हैं, इसके साथ बंदूके रहती थी, इसके साथ इनके गार्ड्स रहते थे। मैंने सोचा कि ये अगर कोई परमात्मा का कार्य कर रहे हैं तो इन्हे इन सब चीज़ों की जरूरत क्या है। और बेतहाशा पैसा लूट रहे थे। करोड़ों में इन्होंने पैसे लूटे लोगों से झूठ बोलकर। ये तो दो बातें मेरी नज़र में आयी। मैंने सोचा कि ये तो कलयुग की ही महिमा है कि ऐसे दुष्ट लोग अभी पनप रहे हैं। पर इसका इलाज यही कि जब मनुष्य की चेतना जागृत हो, उसके अन्दर सुबुद्धि आये और वो समझ लें कि ये सब गलत चीज़ है और ये सब करने से कोई लाभ नहीं है। तिसरा मैंने ये देखा कि जिस समाज में मैं रह रही हूँ उस समाज में लोग हर मिनट ऐसा काम करते थे कि जिससे उनका नाश हो जाए। जैसे शराब पीना, औरतों के पीछे भागना और तरह-तरह की चीज़ें। और बहुत ही ज्यादा पैसे का लगाव इन लोगों को है। और बात करते वक्त लगता नहीं था कि वे नैचरल बात कर रहे हैं, कुछ अज़ीब सा, बन-ठन के ड्रामा करके बत करते थे। मैं सोचती थी कि मनुष्य को क्या हो गया है। ऐसे क्यों ड्रामे में फँसा हुआ है और इस तरह के गलत काम करता है। लेकिन मैं किससे कहती। मैं तो बिलकुल अकेली थी।

उस वक्त जब हम यहाँ आये तो यही एक उलझन थी कि क्या किया जाय? यहाँ आने पर जब मैंने देखा कि ये राक्षस लोगों को मेसमराइज कर रहा था तब मेरी समझ में आया कि अब अगर सहस्रार नहीं खोला गया किसी तरह तो न जाने लोग कहाँ से कहाँ पहुँच जाएंगे। और इनके जो असर है, इसके जो साधक हैं, जो परमात्मा को खोज रहे हैं, सत्य को खोज रहे हैं न जाने कहाँ जा सकते हैं। तब देखने के बाद मैं दूसरे दिन सबेरे रातभर समुद्र के किनारे रही। अकेली थी बड़ा अच्छा लगा। कोई कुछ कहने वाला नहीं। और तब मैंने ध्यान में जाकर अपने अन्दर और सोचा सहस्रार खोला जाय। और जैसे मैंने ये इच्छा की कि अब सहस्रार का भ्रमणरंध्र खुल जाए। ये इच्छा करते ही कुण्डलिनी को मैं अपने अन्दर देखती क्या हूँ कि जैसे टेलिस्कोप होता है उस तरह से खटखट करके ऊपर तक

गयी। उसका रंग ऐसा था कि जितने भी यहाँ पर आप लोगों ने दिये लगाये हैं, इन सब दियों का रंग मिला लीजिए। जैसे कि लोहा तपता है तो उसका रंग और तब मैंने देखा उस कुण्डलिनी का बाहर का यन्त्र जो था वो इस तरह से उठता गया। हर एक चक्र पे खटखट आवाज आयी और कुण्डलिनी जाकर ब्रह्मरंध्र को छेद गयी। तो मेरे छेदने की तो कोई बात नहीं थी। लेकिन मैंने देखा कि विश्व में अब बहुत आसान हो जाएगा। और उस वक्त मुझे ऐसा लगा कि ऊपर से जो कुछ भी शक्ति थी वो मेरे अन्दर पूरी तरह से, एक ठण्डी हवा जैसे चारो तरफ से आ गयी। अब मैं समझ गयी कि अब कार्य को शुरू करने में कोई हर्ज नहीं क्योंकि जो उलझन थी वो खत्म हो गयी। अनिश्चित, बिल्कुल निश्चित हो कर के मैंने सोचा कि अब समय आ गया।

आखिर होगा क्या ? ज्यादा से ज्यादा लोग मारेंगे, पिटेंगे। ज्यादा से ज्यादा हसेंगे, मज़ाक करेंगे। और उससे आगे वो सबको मार डालेंगे। इसमें डरने की कोई बात नहीं। ये जो करना ही है। इसी कार्य के लिए हम आये हैं इस संसार में। क्योंकि सामूहिक चेतना को, कलेक्टिव कॉन्शस को जगाना, मैंने सोचा कि जब तक लोग आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त नहीं करते, अपने को नहीं जानते तब तक ये कार्य असंभव है। और सब दुनियाभर की चीज़ें कर लें इससे कोई फायदा नहीं। इसलिए इस कार्य को मैंने सबसे पहले एक काफ़ी बुढ़ी स्त्री थी जो कि हमें बहुत मानती थी, वो पार हो गयी। तब मुझे सन्तोष हुआ। मैंने कहा चलो एक तो पार हुये। इस कलयूग में किसी को पार करना कोई आसान है ? जब एक पार हुई तब मुझे लगा, कि हो सकता है कि और बहुत से पार होंगे। और सामूहिक चेतना के लिए चेतना देना तो बहुत आसान था। एक इन्सान को पार कराना बहुत आसान था। एक आदमी को चित् करना बहुत आसान था। पर कलेक्टिवली, सामूहिक के लिए कार्य करने के लिए जो मैंने मनुष्य के बारे में अनुभव किया था उस पर थोड़ासा काम था। काम ऐसा कि जब मैं रुकूँ कि किस आदमी में दुर्गुण है, या कोई तकलीफ है या उसके अन्दर कंडिशनिंग है तो उसको निकालने के लिए क्या करना चाहिए। क्योंकि एक आदमी के लिए एक परेशानी दूसरे को, दूसरी तिसरे को, तीसरी। अगर सामूहिक कार्य करना है तो एक ही जागरण से सबको लाभ होना चाहिए। सबको फायदा होना चाहिए। अभी मैं आपको समझा नहीं सकती क्योंकि कम समय है, कि सामूहिक चेतना का जो कार्य किसी ने आज तक नहीं किया। ये बात सही है। वो मैंने बहुत ध्यान-धारणा से प्राप्त किया।

अपनी कुण्डलिनी को चारों तरफ घूमा के, अपने कुण्डलिनी को बार-बार लोगों पर उसका असर डाल के और बिल्कुल इस मामले में कोई भी नहीं जानता था मेरे अन्दर क्या शक्तियाँ हैं ? मैं कौन हूँ ? कोई नहीं जानता। हमारे घर में भी कोई नहीं जानता। और ससूराल में भी कोई नहीं जानता था। मैके में भी कोई नहीं जानता था। और मैंने कभी किसी से बताया नहीं। क्योंकि बताने से भी खोपडी में जाना तो आसान चीज़ नहीं है। इन्सान की खोपडी ऐसी है, मैंने देखी है। जिसमें तो कोई भी विचार घूसना बहुत मुश्किल है। सब अपने ही घमण्ड बैठे हुए, सब अपने को कुछ न कुछ समझ रहे हैं। अब इनको कौन बतायें ? जैसे कबीर ने कहा, 'कैसे समझाऊँ सब जगहन से' मुझे तो लगा अँधा नहीं है पर अज्ञानी है, एकदम अज्ञान का भण्डार। और ये इतना सूक्ष्म ज्ञान इनको कैसे दिया जाए ?

लेकिन कुण्डलिनी जब उस लेडी की, उस देवी की जब जागृत हुई तो मैंने देखा कि उसके अन्दर एक सूक्ष्म शक्ति आ गयी। और वो उस सूक्ष्म शक्ति से मुझे समझने लगी। उसके बाद बारह आदमी पार हुए। और पार होने के

बाद हैरान हो गए क्योंकि उनकी आँखों में एकदम चमक आ गयी। और वो देखने लगे सब चीज़ को। एक अजीबोगरीब सम्वेदना उनके अन्दर आ गयी। जिससे वो महसूस करने लगे। शुरुआत के बारह लोगों के हर एक चक्र पर मैंने अलग-अलग काम किया। क्योंकि जब नींव में जब चीज़ पड़ती है वो मजबूत होती है। उसकी मजबूती करने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है। क्योंकि हालांकि उनकी कुण्डलिनी जागृत हो गयी थी। आप जानते हैं कि कुण्डलिनी के जागृत करने के बाद भी उसको ठीक दशा में ले जाने के लिए ध्यान-धारणा आदि करनी पड़ती है। और उसको बिठाना पड़ता है। इन बारह आदमीओं पर मैंने बहुत मेहनत की। और उस मेहनत के फलस्वरूप ये जरूर मैंने जान लिया कि अगर ये बारह आदमियों की बारह प्रकृतियाँ और उनको साथ में बिठा के किस तरह से, कहना चाहिए कि आत्मा की जो प्रकाश शक्ति है उसको किस तरह से संगठित करना चाहिए। जैसे की हम सुई में फूल पिरोते हैं वो समग्रता किस तरह से आनी चाहिए? इन बारह आदमियों की अलग-अलग प्रकृतियों को किस तरह से एक सूत्र में बाँधा जाए? और जब उनकी जागृति हो गयी तब मैंने देखा कि उनके अन्दर, सबके अन्दर एकसूत्रता बँधती जा रही थी। धीरे-धीरे बँधती जा रही थी। थोड़ी बहुत मेहनत भी करनी पड़ी। लेकिन किसीको बताने के लिए, जनता-जनार्दन को बताने के लिए मैंने सोचा अभी उसके लिए अभी आसान नहीं है। लोगों को समझने की बात नहीं है। फिर जहाँगीर हॉल में एक कार्यक्रम का आयोजन किया। वहाँ मैंने बताया कि कितने राक्षस आए, कितने राक्षसिनी आए। ये लोग क्या करेंगे? तो सब घबरा गये। कहने लगे कि अगर ऐसे माताजी बात करेंगी तो इनको कोई भी कैसे मदद करेगा। तो सबने काम से बताया कि ऐसी बातें आप मत करिए, नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाएगी। मैंने कहा, 'अभी तक तो मुझे मारने वाला पैदा नहीं हुआ। और आप लोग निश्चित रहिए।'

धीरे-धीरे ये जो छोटी-छोटी सरिताएं थी सबके अन्दर, छोटी-छोटी नदियाँ थी कुण्डलिनी की उनको मैंने कहा कि, 'आप लोग मेरी कुण्डलिनी पर ध्यान दो।' तो ध्यान करते ही वो निर्विचार हो गये। और निर्विचार होते ही साथ में उनको ये लगे कि मेरे साथ उनका बड़ा तादात है। धीरे-धीरे निर्विचारिता बढ़ने लगी। धीरे-धीरे सामूहिकता का एक नया प्रकाश हुआ। ये पहले मैंने जहाँगीर हॉल में देखा। हिन्दुस्थानी लोग जो हैं, भारतीय लोग जो हैं ये इस भूमि में इसलिए पैदा हुए हैं कि ये बड़े ही धार्मिक हैं। बहुत ही सुन्दर इनका जीवन रहा होगा। क्योंकि हिन्दुस्थान में इतनी मेहनत नहीं करनी पड़ती। बहुत जल्दी लोग पार हो जाते थे। शुरुआत में जरूर थोड़ाबहुत समय लगा। लेकिन परदेस में तो हाथ टूट जाते हैं। किसी की कुण्डलिनी उठाना ऐसा लगता है कि पहाड़ उठाया जा रहा है। और फिर धड़क से नीचे गिर जाती है। उठाओ और फिर धड़क से गिर जाओ। और फिर जब कलेक्टिवली, सामूहिक में तो बड़ी मुश्किल! और अजीबो-गरीब सवाल पूछना, ये और वो, दुनियाभर की बातें। जब मैं उसका जवाब देती तो हैरान हो जाते। ये इतना जानती कैसे हैं! इनको ये सब मालूम कैसे है? बड़ी मेरी परिक्षा करते हैं। क्योंकि अहंकार बहुत ज्यादा है।

अब धीरे-धीरे ऐसी चीज़ें, जैसे लण्डन में पहली मर्तबा सात सहजयोगी आए। वो सातों ही हिप्पी के टाइप और ड्रग्स लेते थे। उनसे वो सहजयोगी बन गये। इसका मतलब ये तो हुआ कि एक तरह का सहारा मिल गया, निश्चिंती हो गयी कि सहजयोग से लोग ड्रग्स छोड़ रहे हैं। ड्रग्स अँडिक्ट को ठिकाने लगाना कोई आसान बात

नहीं! उसमें एक अच्छाई, क्योंकि उन पर जो हमने मेहनत करी उससे एक अनुभव आ गया कि कठिन से कठिन भी कोई इन्सान हों, जब उसकी इच्छा होती है तो उसे योग प्राप्त होना चाहिए, उसे आत्मज्ञान होना चाहिए। इच्छामात्र अगर हो तो वो पार हो जाता है। तब मैं सबसे कहती थी कि आप हृदय से इच्छा करो कि आपको आत्मसाक्षात्कार चाहिए। बस, उसी पर लोग झट से पार हो गये। उसमें अनेक देशों के अनुभव हैं मेरे पास। इससे जैसे रशिया है या युक्रेन है या रूमानिया इन देशों का मेरे खयाल से हमारे देशों से कभी सम्बन्ध रहा होगा जबरदस्त। और यहाँ से नाथ पंथी जो है, मच्छिंद्रनाथ, गोरखनाथ ये गये होंगे कभी। क्योंकि इनके यहाँ जो चीजें मिली, मुझे उससे पता हुआ कि ये लोग कुण्डलिनी के बारे में इसा से भी तीन सौ साल पहले से जानते हैं। तब ये समझ में आया कि ये लोग इतनी जल्दी पार कैसे हो जाते हैं!

महाराष्ट्र में बहुत काम किया नाथ पंथियों ने और मैंने भी बड़ी मेहनत की। पर दुःख की बात ये है कि जो चीज़ नॉर्थ इंडिया में हम कर पाए वो महाराष्ट्र में अभी भी मैं नहीं कर पाई। समझ में नहीं आता जहाँ पर संतों ने अपना खून बहाया और हर एक महाराष्ट्रीयन को मालूम है की नाथपंथियों ने क्या कार्य किया? और पता नहीं क्यों जो चीज़ मैंने नॉर्थ इंडिया में पाई, पहले तो मैं दिल्ली को बिल्ली ही कहती थी, सालों मेहनत की वहाँ भी लेकिन उसके बाद जो सहजयोगी वहाँ मिले हैं। जिस तरह सहजयोग फैल रहा है। इससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। इतना प्रवाह देख कर के ये आश्चर्य होता है कि जहाँ पर इतना संत-साधुओं ने काम किया है, इतनी मेहनत की है और बचपन से हम लोग यही सिखते आए हैं, पढ़ते आए हैं, यहाँ पर सब लोग यही बातें करते हैं उस महाराष्ट्र में सहजयोग उतना गहरा नहीं फैला। जैसा कि नॉर्थ में फैला। इसका क्या कारण हो सकता है? एक ही मुझे लगता है कि जब पहले से ही सब चीज़ मालूम है तो उसके प्रति जो है अवज्ञा हो जाती है। उधर इन्डिफरन्स हो जाता है। संस्कृत में एक श्लोक है 'अति परिचयात् अवज्ञा' 'संतत गमना अनादरो भवति, प्रयागवासी कृपे स्नानं समाचरेत्' कि जब बार-बार आप कहीं जाते हैं, बार-बार आप किसीसे मिलते हैं तो आपका अनादर होने लगता है, फिर आपका आदर नहीं रह जाता। क्योंकि प्रयाग में रहने वाले लोग, अलाहाबाद में रहने वाले लोग गंगाजी में नहाने की जगह, जो त्रिवेणी का संगम है, वो लोग घर में जो कुँआ है उसमें नहाते हैं। और लोग दुनियाभर से वहाँ जाते हैं, जाकर के वहाँ नहा लेते हैं। यही बात शायद है कि जो इतनी मान्यता सहजयोग को नॉर्थ इंडिया में है। यहाँ भी, ऐसा नहीं कि यहाँ सहजयोगी नहीं, महाराष्ट्र में भी बहुत सहजयोगी हैं और बहुत कार्यान्वित भी हैं पर सहजयोग के प्रति जो समर्पण चाहिए वो मैंने तो कभी नहीं देखा। पता नहीं शायद बढ़ें। समर्पण का मतलब है कि ये हमें सहजयोगी पद जो मिला उस सहजयोगी पद को हम किस तरह से इस्तमाल करें। वो सिर्फ अपने लाभ के लिए, अपनी तकलीफ के लिए, अपने ही परिवार के लिए सोचते हैं या सारे संसार के लिए सोचते हैं ये कुछ समझ में नहीं आता। महाराष्ट्र की जो संस्कृति है और जो महाराष्ट्र के धर्म की इतनी गहन छाप, उस महाराष्ट्र में सहजयोग इतना नहीं फैला है। और गुजरात में जहाँ नारगोल में जहाँ हमने ब्रह्मरन्ध्र खोला वहाँ तो बहुत की प्रॉब्लेम। गुजरात के लोग तो मेरी समझ में ही नहीं आते। बहुत मेहनत की गुजरात में पर सबसे ज़्यादा महाराष्ट्र में मेहनत की है। क्योंकि आज यहाँ महाराष्ट्रीयन लोग बहुत हैं। मुझे कहना ये है कि सहजयोग को बढ़ाने के लिए सबसे पहले आप ध्यान-धारणा करें। और गहरे, जब गहरे आप उतर जाते हैं तब आपको लगता है कि मैं ही क्यों इसका मज़ा उठाऊँ? और लोग भी



इसका मज़ा उठाये। और जब ये भावना अन्दर आती है तो सहजयोग फैलता है और उसके बाद मनुष्य जो है अपने जीवन में यही सोचता है कि दूसरों को सुख देना, दूसरों को आनन्द देना इससे बढ़कर और कुछ नहीं। और सब चीज़ों को भूल जाते हैं। यह जब होता है तब सहजयोग फैलता है। रात-दिन वही चिंतन, रात-दिन वही सोचना। इसमें मज़ा आता है।

आज मैं यह देखकर बहुत खुश हुई कि सारे दुनिया से यहाँ लोग आए इसके अलावा और भी लोग जो कहना चाहिए कि परदेस से तो आए हैं और दिल्ली वगैरा से आए हैं कम से कम एक बड़ी मुझे आनन्द की बात लगती है कि इस कठिन जगह आप सब लोग कैसे पहुँचे? यह तो प्रेम की महति है। और यह सिर्फ प्रेम है आपका। ये बहुत बड़ी चीज़ है। लेकिन इसमें बस फर्क ये है कि जिस तरह से सहजयोग है, अब देखिए, कोल्हापूर में कितनी मेहनत की। कोल्हापूर में बहुत मेहनत करी लेकिन कोल्हापूर में सहजयोग बहुत कम है। आश्चर्य की बात है! ऐसा क्यों होता है? उन्होंने कहा पंढरपूर में ८०० सहजयोगी है। पर ऐसा वहाँ नहीं। गाजियाबाद में जाओ तो १५,००००, फिर आप फरिदाबाद में जाओ १६,००० फिर आप हरियाणा में जाओ तो वहाँ २५,०००। वहाँ तो हजारों की बात हैं। और महाराष्ट्र में कि ८०० आदमी यहाँ है, ५०० आदमी वहाँ है, ७०० आदमी वहाँ। इसका कारण क्या है मैं आज तक नहीं समझ पाई। यही अगर सोचना है, यही सोच सकते हैं कि यहाँ पर आत्मज्ञान, आत्म बोध, महानुभाव पंथ आदि अनेक चीज़ें इतनी ज़्यादा असलियत की हो गयी कि अब इधर ध्यान ही नहीं। ऐसे इन लोगों को महाराष्ट्र में पैसे की ललक नहीं। जैसे आप लोगों को गुजरात में, उत्तर प्रदेश में भी, उत्तर भारत में भी काफी पैसे की ललक है। महाराष्ट्र में ये बात नहीं। सुबह से शाम वो भगवान के चार बजे उठकर ध्यान करना, ये करना, वो करना चलेगा। पर उसमें एक तरह निगरानी की बात नहीं। उसमें हृदय से करें, भक्ति से करे। और उस भक्ति को बाँटने की कोशिश करें। ये महाराष्ट्रीयन्स को करना चाहिए। बारह महीने में महाराष्ट्र में ही हमारे गणपतीपूले का प्रोग्राम होता है और महाराष्ट्र में काफी अच्छे सहजयोगी हैं। गहरे, बहुत गहरे! यहाँ की युवा शक्तियाँ भी बहुत अच्छी हैं। लेकिन तो भी मैं कहूँगी कि जिस तरह से सहजयोग नॉर्थ में फैला है। अब जहाँ देखो बारह पक्ती में है। हमारा ससुराल वहाँ है। हर जगह, हर एक गाँव में, हर एक जगह। जहाँ एक आदमी पहुँच गया, सहजयोगी बन गया, जैसे कोई सूखी लकड़ी रहती उसमें जरासी चिनगारी पड़ जाए तो आग लग जाती है इस तरह से। ये आखिर किस कारण जोरो में बह रहा है। समझ में नहीं आता। और जो हो जाते हैं तो कोई सवाल नहीं, कुछ नहीं। पर महाराष्ट्र में सवाल बहुत पुछे क्योंकि पोथियाँ सब पढ़ बैठे हैं। घर में रोज एक-एक को, आप देखिए, किसी महाराष्ट्रीयन्स के यहाँ कम से कम दस गुरुओं के फोटो हैं। उसमें से सच्चे शायद एकाद-दो ही हो। और सब तरह की मुर्तियाँ हैं। गणेशजी का वास है यहाँ। चार यहाँ गणेशजी बैठे हैं। उसे कहने चाहिए, उसे तो अष्टविनायक कहते हैं। पर चार मैं इसलिए कह रही हूँ कि एक-एक गणेश के दो-दो अँसपेक्टस या दो-दो तरिके, विशेष अलग-अलग यहाँ पर है। अब उसके बारे में महाराष्ट्रीयन्स जानते हैं। वहाँ जाएंगे, गणेश पूजा करेंगे वो। फिर यहाँ आकर तीन देवियों का प्रादुर्भाव है। यह सब होते हुए भी वहाँ जाएंगे। वहाँ मंदिरों में जाएंगे। महालक्ष्मी मंदिर में जाएंगे रोज। वो सब करेंगे। और अब जब सहजयोग में आए हैं तो अब छुट्टी हो गयी। कुछ भी नहीं करना है। ये बड़े आश्चर्य की बात है!

आज क्योंकि बहुत से महाराष्ट्रीयन यहाँ आए हैं। मैं बताना चाहती थी कि देखिए दिल्ली से न जाने कितने लोग, इतने लोग महाराष्ट्र से कभी नहीं जाएंगे। मराठी में इनको 'घरकोंबडे' कहते हैं। माने वो बस अपने ही देश में। बम्बई वाले आपको कभी नहीं दिखाई देंगे पूना में जा कर काम करते हुए। और पूना वाले तो, उनको एक तरह का भूत चिपका हुआ है। मैं इसलिए कह रही हूँ कि ये सब बात खुले आम कहने से कभी-कभी ठीक हो जाती है। खुले आम कहना है कि महाराष्ट्र में जो सहजयोग का ठिकाना हुआ है उससे तो इनके जो आठवले जो है वो अच्छे! बकते हैं सिर्फ लेकिन लाखों लोग लाएं। गुजरात का तो क्या कहना। इनको तो ऐसे-ऐसे गुरुओं ने पकड़ें है। पर महाराष्ट्रीयन्स को क्या हुआ। जिसमें रामदासस्वामीने सब गुरुओं की चर्चा की और उसमें बताया है, इतना ही नहीं सबसे तो मैं कहूँगी ध्यान दें, इतना साल सहजयोग समझाया। रोज वही गाते हैं। और जो नामदेव ने जो लिखा हुआ है जोगवा का गाना वो रोज जहाँ तुम गाते हैं कि 'हमको माँ तुम योग दों।' पर वो योग करने के लिए तुमको कुछ करना है। आप किसी गाँव में जाओ वहाँ भीड़ हो जाएगी जब मैं जाऊँगी। उसके बाद अगर दो आदमी भी मिल जाए तो बड़ी हैरानी। तो मैं ये कहूँगी कि महाराष्ट्रीयन लोगों को चाहिए कि कुछ इन लोगों के लिए प्रार्थना करें। हवन करें, कुछ न कुछ ऐसी सामूहिक चीज़ करें जिससे महाराष्ट्र की जागृति वैसी हो जाए जैसे उत्तर भारत में हुई, जैसे कि रशिया में हुई। वैसे समर्पित हम वो अच्छे हैं। लेकिन सहजयोग क्यों अभी बढ़ता नहीं ये मेरी समझ में नहीं आया। बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है। कोल्हापूर जगह में न जाने कितनी बार पूजाएं हुई। देवी का मन्दिर बहुत सुन्दर है। सब कुछ है। पर वहाँ पर इतनी गहनता नहीं। उसके लिए सामूहिक रूप में सब लोग ध्यान दें क्योंकि महाराष्ट्र को बहुत बड़ा देश है। बहुत ऊँचा देश है। और धर्म के दृष्टि से जो है सो है, पर आध्यात्म के दृष्टि से बहुत ऊँचा देश है। इसलिए सबको चाहे कि वो महाराष्ट्र के लिए थोड़ीसी जागृति की बातचीत करें। ऐसे कोई झगड़ा नहीं है। कोई परेशानी नहीं है। लेकिन जो सहजयोग बढ़ना चाहिए वो न जाने आजतक तो इतना बढ़ा नहीं। हो सकता है आगे ठीक हो जाए।

अब जो आप लोग इतने यहाँ आए, न जाने क्यों एक अजीब तरह की अनुभूति हुई। किस तरह से पच्चीस साल में इस छोटीसी जगह में आप लोग आए। पच्चीस साल तक हमने मेहनत की ये बात मैं जानती हूँ। मेहनत बहुत की। पर पच्चीस साल के बाद इतने लोग इस नारगोल का माहात्म्य समझेंगे और यहाँ आएंगे ये कोई आश्चर्य की बात नहीं।

'नारगोल' हमारे सहजयोग में मतलब होता है सहस्रार। और जब मैं यहाँ आई। यहाँ की वनश्री देखी वगैरा और बहुत तबियत खुश हो गयी और एकदम अन्दर से जैसे लगा कि इस प्रकृति की किसी बड़ी भारी आशीर्वादित जगह हम आयें बहुत अच्छा लगा और जब, वो तो मे का महिना था लेकिन मुझे बिल्कुल नहीं गरमी लग रही थी जब सहजयोगी आते हैं तो ठीक है उनकी गर्मी में खिंचती रहती हूँ लेकिन वहाँ; यहाँ कोई सहजयोगी नहीं थे इन दिनों की तरह कुछ गर्मी नहीं लगी और जब सहस्रार खोला तो मैंने देखा कि कोई इसके बारे में जानता भी नहीं है। ज्यादातर गुजराती लोग थे उसमें महाराष्ट्रीयन कम थे और महाराष्ट्र में ही जो चीज़ इतनी किताबें लिखी है कितनी ही किताबें लिखे हैं आप देखियेगा, असली किताबें लिखी हैं, झूठ नहीं है, जो सत्य है वही लिखा हुआ है, चक्रों पर लिखा हुआ है कुण्डलिनी पर लिखा हुआ है, सबकुछ इतना लिखने पर भी यहाँ उस ज्ञान को प्राप्त करने के बाद



लोग उसका इस्तेमाल गर करें तो न जाने कितना बढ़ जाएगा, कितना यहाँ सहजयोग बढ़ सकता है। अब हमारी जो सहजयोग की जो प्रणाली है वो इतने लोगों में फैल गयीं इतनी गहरी पहुँची जो आपने ड्रामा देखा है उससे समझ गये होंगे। इस ड्रामा में उन्होंने दिखा दिया अपने दिमाग से सोचकर के कि 'माँ क्यों आई?' कि सब लोगों ने कहा कि हमने बहुत मेहनत करी। हमने पूरी कोशिश करी कि इन्सान जो है वो आध्यात्म में आ जाएं और परमात्मा की और उसकी नज़र जाए और उसको किसी तरह से योग प्राप्त हो पर कुछ चीज़ बनी नहीं है इसलिए अब हम देवी से कहते हैं कि तुम ही अवतरण लो, तुम ही अवतरण लेकर के जो तुमने ये संसार बनाया है उसको ठीक करो। बिलकुल पते की बात है। इसमें कोई शक नहीं है और हुआ भी ऐसे है और बना भी ऐसे है। सारा जो कार्य है इस तरह से बड़े सुचारू रूप से बन रहा है और जिस वक्त इस भ्रमरान्ध्र को तोड़ा था उस वक्त सोचा भी नहीं था मैंने कि मेरे जीवित रहते हुए इतना मैं कार्य देख सकूंगी पर ये कुण्डलिनी की महिमा और परम चैतन्य का कार्य है। परम चैतन्य से तो मैं खुद हार गई, पता नहीं क्या करते रहते हैं, हालांकि ये मेरी शक्ति है, लेकिन ये परम चैतन्य आप देख रहे हैं, ये तरह-तरह के फोटोग्राफ्स मेरे बना रहे हैं, तरह-तरह के चमत्कार मेरे दिखा रहे हैं, पचासो तरह के चमत्कार। वैसे मैक्सिको में एक स्त्री थी, जो काम करती न्यूयॉर्क में। वहाँ मुलाकात हुई उसकी। फिर वो पार भी हो गयी थी और मैक्सिको चली गयी थी, वहाँ नौकरी मिल गयी यु.एन. में। उसने चिट्ठी लिखी कि मेरे लड़के की तबियत खराब हो गयी है। छोटा सा है, उमर में बहुत छोटा है और ये बिमारी हमारे खानदान में होती है। जब लोग बिलकुल बुढ़े हो जाते हैं लेकिन इस बच्चे को इतनी छोटी उमर में हो गयी और अब ये बच नहीं सकता इसके लिए माँ मैं क्या करूँ। ऐसे तीन चिट्ठीयाँ उसने लिखी है। ये परम चैतन्य की बात बता रहे हैं और चौथी चिट्ठी में उसने लिखा कि लड़का अपने आप ठीक हो गया है। वो हॉवर्ड युनिवर्सिटी में पढ़ता था। एकदम ठीक हो गया। उसकी बिमारी एकदम ठीक हो गयी। डॉक्टर ने कहा कि 'किया क्या तुमने? वो कैसे ठीक हो गया?' तो ये परम चैतन्य जो है, इससे काम करते हैं। ये कमाल है तो अब किसी ने पूछा कि 'ये गणेश जी दूध पी रहे हैं, क्या है ये!' मैंने कहा कि भाई, ये परम चैतन्य, कृतयुग में आ गये हैं और कार्य अगर .....है। अब ये करे सो काम है। गणेशजी को दूध पिलायेंगे, वो शिवजी को दूध पिलायेंगे, इसको कुछ कह सकते हैं! कौनसी बात है जो परमचैतन्य नहीं कर सकते हैं? हर तरह का वो काम करते हैं।

एक साहब थे कॅनडा में। ये भी काफी पुरानी बात है, तो उन्होंने मुझे चिट्ठी लिखी कि माँ, मेरे पास पैसे नहीं हैं और इस कार्य के लिए मुझे इतना रूपया चाहिए। मैंने कहा, 'अच्छा, कोई बात नहीं। ठीक है।' फिर दूसरे दिन उसने मुझे फोन किया कि 'माँ, मुझे रूपये मिल गये।' मैंने कहा कि वो कैसे? तो उसने कहा था कि मुझे जितने पैसे चाहिए थे उतने एक्झॅक्टली मुझे मिल गये। बहुतों को अनेकों अनुभव आयें। अनेक अनुभव आ रहे हैं क्योंकि परम चैतन्य जो है वो आशीर्वाद स्वरूप है। हर जगह आपको आशीर्वाद देगा, प्रेम देगा, हर तरह से आपको सम्भालेगा, सबकुछ है लेकिन उनकी जो चाल है न उसमें स्पीड आ गयी है, मुझे खुद ही समझ में नहीं आता है कि ये इतने कार्य कैसे कर लेता है। अमेरिका जैसी जगह जहाँ कि लोगों को बिलकुल भी कहना चाहिए कि सुझबुझ ही नहीं है, अध्यात्म में। इस टाईम अमेरिका में इतना बड़ा कार्यक्रम हुआ, इतने बड़े हॉल में, लोगों को बैठने की जगह नहीं थी और पाँच मिनट में सब लोग पार हो गये, पाँच मिनट में। वही फिर लॉस एंजलिस में भी हुआ। मैं हैरान हो गयी कि ये लोग इतने मूर्ख हैं इनके साथ ऐसे कैसे हो गया है? फिर कॅनडा, वहाँ भी पाँच मिनट में पार हो गये, फिर वहाँ

से आगे गये वहाँ भी पाँच मिनट में पार हो गये। कुछ समझ में आया नहीं कि क्यों और क्या है? तो परम चैतन्य की कृतियाँ इतनी बढ़ गयी हैं। इतने तरह-तरह के हो गये हैं कि कोई समझ नहीं सकता है कि क्या बात है और ये किस तरह से घटित होता है; ये अगर कोई मुझसे पूछे तो मैं नहीं बता पाऊँगी। अब किसीने मेरा फोटो लिया कि मैं चाहती हूँ कि जिस तरह से माँ के बारे में कहा जाता है कि उनके चरणों में चाँद है और सर पर सूरज। वैसा फोटो मुझे चाहिये और वाकई में वैसा फोटो आ गया। आप लोग जिस चीज़ की इच्छा करें वो हो जाता है। इसको क्या कहना चाहिये? इस परम चैतन्य की अपनी शक्ति जो है वो इतनी सुचारू रूप से चलती है और इस कदर जानती है, हर एक की तकलीफ, परेशानियाँ बड़े प्यार से, दुलार से उसको ठीक कर देती है। इस परम चैतन्य की जो महती है आज तक आपने आदिशक्ति की पूजा की है, उसी वक्त आपने इस परमशक्ति की भी, जिसे कि परम चैतन्य कहते हैं, रूह कहते हैं उसकी पूजा की है।

यहाँ पर जब मैं आई तब मैंने उसी वक्त उसी का सब जगह पर प्रादूर्भाव देखा है और सोचा कि यहाँ कुछ न कुछ देवि ने आशीर्वाद दिया हुआ है पहले ही। और वाकई में यहाँ इतने जल्दी, खट से जो ये कार्य हुआ, इतना बड़ा, इतना महान, वो मेरी समझ में नहीं आया कि कैसी इतनी जल्दी क्यों हो गया। ये वही परम चैतन्य है। अब कहिये कि मेरी शक्ति है लेकिन मैं ही मेरी शक्ति को नहीं जानती हूँ ऐसा हाल हो गया है। इतने जोरों में दौड़ रही है कि समझ में नहीं आता कि अब क्या करेगी और आगे क्या करना है। मतलब ये है कि ये जो शक्ति है, ये इतनी अब आतुर है, इतनी.....है कि संसार में ये जो परिवर्तन है, ग्लोबल ट्रांसफॉर्मेशन है उसको करने में बिलकुल देर नहीं करता है, पर जो इसमें आयेंगे और जो इसके लिए करेंगे वो ही प्राप्त कर सकता है।

अब महाराष्ट्र की यही बात मैं आपको बताने जा रही हूँ कि ये शक्ति कार्यान्वित हो रही है। बड़े जबरदस्त और आप लोगों को सबको चाहिए कि इसको पूरी तरह से आप लोग जान ले, समझ लें इस शक्ति को, जो कार्य करने की जो प्रणाली है उसको समझ लें और उसके माध्यम से आप काम कर सकते हैं। अगर वो आप इस्तेमाल करना शुरू कर दें तो न जाने आप कहाँ से कहाँ पहुँच जाएंगे। पर मनुष्य को पार होने के बाद भी, जब तक इसको, वो चीज़ विशेष न समझे तब तक सहजयोग फैलना बड़ा मुश्किल हो जाएगा। रूमानिया देश जिन्होंने कभी आदिशक्ति नाम की क्या चीज़ है सुना ही नहीं; ऐसा मैं सोचती हूँ। वहाँ सहजयोग इतने जोर से फैला है बड़ा आश्चर्य होता है कि वहाँ ५००० सहजयोगी एक शहर में हैं। अब तो और भी बढ़ गये। वही चीज़ इस महाराष्ट्र में होना चाहिए और बार-बार मुझे इसकी चिंता लगी रहती है कि ये चीज़ महाराष्ट्र में क्यों नहीं होती है। क्यों नहीं सहजयोग इस तरह से फैल रहा है जैसा फैलना चाहिए। बड़े-बड़े शहर हैं बड़ी-बड़ी जगह है, वहाँ ये कार्य होना है।

तो आज के दिन एक बहुत बड़ी बात हुई है कि पचीस साल इस चीज़ से झूँजते -झूँजते इस दशा में हम आ गये हैं कि यहाँ पर इस जगह आप लोग आये हैं इसका गौर बढ़ाने, इसकी महत्ता बढ़ाने और इसको पुनीत करने मेरे लिए कोई शब्द नहीं है। मैं सोचती हूँ तो मेरा जी भर आता है। आप लोगों के लिए कि कहाँ कहाँ से आप लोग यहाँ आये हैं।

अनंत आशीर्वाद!

# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

पंचवीस वर्षापूर्वी मी जेव्हा नारगोलला आले त्यावेळी सहस्रार उघडण्याचे माझ्या मनात नव्हते. माझा विचार होता, की अजून थोडे थांबावे आणि मानवाची स्थिती कशी आहे ते पहावे. त्यावेळेस आत्मसाक्षात्कार म्हणजे काय हे समजण्याइतकी त्याची स्थिती नव्हती. जरी पुष्कळ साधुसंतांनी आत्मसाक्षात्काराबद्दल सांगितले होते तरीही; महाराष्ट्रात तर हे ज्ञान खूपच पसरले होते. कारण मध्यमार्ग सांगणाऱ्या नाथपंथीयांनी स्वतःच्या उद्धाराचा एक मार्ग सांगितला तो म्हणजे स्वतःला जाणणे. स्वतःला ओळखल्याशिवाय तुम्ही काहीही मिळवू शकत नाही हे मला माहीत होते पण त्यावेळी माणसाची स्थिती फार विचित्र असलेली माझ्या पाहण्यात आले होते; खोट्या लोकांच्या ते मागे लागले होते. त्या लोकांना नुसते पैसे मिळवायचे होते. सत्य ओळखण्याइतकी मानवाची स्थिती नसते तेव्हा त्याच्याशी सत्याबद्दल बोलणे अवघड होते. लोक माझं का ऐकणार? मला पुन्हा पुन्हा वाटायचे, की माणूस अजून वरच्या स्थितीला यायला हवा. पण मला हे ही दिसत होते, की या कलियुगात माणूस अगदी बेजार झाला आहे. गतजन्मीच्या पापकर्मांमुळे अडचणीत आलेले खूप लोक होते. काही लोक मागल्या जन्मात केलेल्या कर्मांमुळे राक्षस होऊन जन्माला आले आणि ते इतरांना त्रास देण्यात, उपद्रव देण्यात मग्न होते. याचं त्यांना काही चुकतोंय असंही वाटत नव्हते. मी दोन प्रकारचे लोक पाहिले. एक दुसऱ्यांना त्रास देणारे आणि दुसरे असमाधानी व त्रास भोगणारे. यापैकी कोणाकडे लक्ष द्यायचे याचा मी विचार करत होते. जे दुसऱ्यांना त्रास देत होते त्यांना आपण कोणी विशेष किंवा परिपूर्ण आहोत असे वाटत होते. आपल्याकडून दुसऱ्यांना त्रास होत आहे एवढेही त्यांना समजत नव्हते. ज्यांना त्रास होत होता ते असहाय असल्यासारखे तो सहन करीत होते. आपल्याला अधिकार गाजवून त्रास देणाऱ्या लोकांना विरोध करण्याचेही त्यांच्या मनात येत होते. मग मला वाटायचं, की आपण बदलले पाहिजे हे माणसाला कधी उमजणार? हा बदल आपल्याला घडवून आणलाच पाहिजे. काही लोक जास्त त्रास देतील, कमी देतील, काही जास्त सोसतील, काही कमी. त्यावेळी समाजाची ही तऱ्हा होती. मग ते सर्व देवाच्या नावाखाली, देशाच्या, सरकारच्या, आर्थिक सुधारणांच्या किंवा काटकसरीच्या इ.नांवाखाली. कोणी अगदी गरीब तर दुसरे अति-श्रीमंत अशा तऱ्हेने या देशात एक प्रकारची फसवणूक चालली होती.

मला वाटायचे, की जोपर्यंत माणसामध्ये परिवर्तन होत नाही, तो स्वतःला ओळखत नाही, त्याची खरी महानता व तेजस्विता त्याला प्राप्त होत नाही तोपर्यंत तो असाच वागणार. हे लहानपणापासून माझ्या मनात होते आणि मला वाटले, की माणूस खऱ्या अर्थाने समजणे जरूरीचे आहे. प्रथम मी माणसांचा बराच अभ्यास केला. मी तटस्थ राहून साक्षीभावाने मानवी जन्म समजण्याचा प्रयत्न करीत असे; त्याचे प्रश्न काय आहेत, तो कुठे चुकतो, चुकीचे विचार का करतो इ. विचार केल्यावर मी अशा निर्णयाला आले, की हे सर्व माणसाचा अहंकार वा प्रति अहंकार (कंडिशनिंग) त्याला बाधतो. त्यामुळे तो संतुलनात असू शकत नाही. जोपर्यंत तो संतुलनात येत

नाही तोपर्यंत कुंडलिनी वर कधी येणार? हा सुद्धा एक कठीण प्रश्न आहे.

मी नारगोलला आले, तेव्हा काही विशिष्ट योगामुळे इथे एका राक्षसाने मुक्काम ठोकला होता. त्याने मला पाठविण्याविषयी माझ्या पतीकडे विनंती केली. मला तो मुळीच आवडला नव्हता, पण फक्त पतीच्या आर्जवामुळे मी इथे आले आणि त्याच बंगल्यात राहिले. मी एका झाडाखाली बसून त्या राक्षसाचे खेळ व त्याचा कॅम्प पहात होते. मला आश्चर्य वाटले, की हा राक्षस प्रत्येकाला बोलवून संमोहित करित होता. काही किंचाळत होते, काही कुत्र्यासारखे, काही सिंहासारखे ओरडत होते. मग माझ्या लक्षात आले, की तो सर्वांना पशू योनीमध्ये नेत होता. त्यांची सुप्त चेतना तो प्रभावित करित होता. मला काळजी वाटू लागली. त्याआधी मी बरेच खोटे लोक पाहिले होते. मी इकडे-तिकडे फिरून ते लोक काय करतात ते पाहू लागले. त्यांच्याबद्दल आपल्याला माहिती असावी म्हणून. मी बघितले ते लोक खूप घाबरलेले होते. त्यांच्यात शस्त्रधारी सैनिक होते. ते जर ईश्वरी कार्य करित होते तर या सर्वांची काय जरूर? ते पैसा पण खूप खर्च करतात. लोकांना खोटेनाटे सांगून कोट्यावधी रुपये उधळतात. कलियुगाचे हेच महात्म्य आहे, की असे अनाचारी, दुष्ट लोक समृद्ध होतात. म्हणूनच या सर्वांवर उपाय म्हणजे माणसाची जाणीव जागृत व प्रकाशित व्हायला हवी. त्याला सुज्ञता मिळावी म्हणजे काय चुकत आहे हे त्याला जाणीवपूर्वक समजेल.

मी पाहिले, की माझ्या भोवतीच्या समाजामध्ये लोक मिनिटा-मिनिटाला दारू पिणे. पैशाच्या मागे लागणे अशा हानिकारक गोष्टींमध्ये गुंग आहेत. ते जेव्हा बोलतात ते नैसर्गिक नसायचे; जणू नाटकांतल्यासारखे कृत्रिम वागायचे. माणसाला हे काय झाले आहे असे मला वाटायचे; तो असा गुलामासारखा का मख्ख झाला आहे. चुकीच्या गोष्टी का करित आहे असं वाटायचे. पण हे मी कोणाला सांगणार? मी अगदी एकटी होते. त्यावेळी मी जेव्हा इथे आले तेव्हा याला काय करायचे हाच माझ्यापुढे मोठा प्रश्न होता. तिकडे तो राक्षस लोकांना संमोहित करत असल्याचे मी पहात होते. मग माझ्या लक्षात आले, की आता जर मी सहस्रार उघडले नाही तर देवाच्या शोधासाठी धडपडणारे प्रमाणिक साधक कुठे जाऊन पडतील ते तो परमेश्वरच जाणे.

दुसऱ्या रात्री मी समुद्र किनाऱ्यावर रात्रभर बसून राहिले. मी एकटीच होते आणि प्रसन्न चित्त होते. मग मी ध्यानात गेले आणि स्वतःमध्येच चित्त एकाग्र केले आणि मला वाटले की आता सहस्रार उघडावे. ज्या क्षणी ब्रह्मरंध्र उघडण्याची मला इच्छा झाली त्या क्षणीच स्वतःमध्येच मला कुंडलिनी दिसली. एखाद्या दुर्बिणीसारखी खट्ट असा आवाज होऊन प्रत्येक चक्रातून ती वर येऊ लागली. तिचा रंग तऱ्हेतऱ्हेचा होता. जसं लोखंड भट्टीमध्ये तापवल्यानंतर त्याच्यामधून वेगवेगळ्या रंगाच्या ज्वाळा निघाल्यासारखे. मग कुंडलिनी वर आली आणि ब्रह्मरंध्राला छेद करून बाहेर आली. आता मला माझे कार्य सुरू करता येईल हे मला समजले. कारण आता सर्व प्रश्न संपले आणि काळजीपासून मी मुक्त झाले. आता काय होणार असं मला वाटले. कदाचित लोक विरोध करतील, हरकत घेतील किंवा माझ्याकडे पाहून हसतील? ह्याच्या पलीकडे फार तर मला ठार मारतील. तेव्हा आता त्याबद्दल काही काळजी करण्याचे कारण नव्हते. मला हे करायचेच आहे कारण त्याच कामासाठी मी पृथ्वीवर मानव म्हणून जन्म घेतला आहे; मला सामूहिक चेतना जागृत करायची आहे. मला लक्षात आले होते, की जोपर्यंत लोकांना आत्मसाक्षात्कार होत नाही तोपर्यंत ते स्वतःला जाणणार नाहीत आणि त्याशिवाय हे कार्य

शक्य नाही. जगात त्यासाठी दुसरे काहीही करू शकलात तरी त्याचा उपयोग होणार नाही. मी जागृती दिली ती व्यक्ती एक म्हातारी महिला होती. तिचा माझ्यावर खूप विश्वास होता. मी तिला जागृती मिळावी म्हणून देवाचे आभार मानले. खरं तर या कलियुगामध्ये लोकांना जागृती देणे हे सोपे नाही. तिला जागृती मिळाल्यावर मला समजले, की दुसऱ्या पुष्कळ लोकांनाही असा साक्षात्कार मिळणे शक्य आहे. एखाद्याला व्हायब्रेशन्स देऊन जागृती देणे अगदी सोपे आहे. एखाद्याला आजारातून बरे करणे पण सोपे असते. एखाद्याला जर कसला त्रास असला, कसले दुखणे वा कसली बाधा असली तर त्या व्यक्तीला ठीक करण्यासाठी काय करायला हवे? एकाला एका प्रकारचा त्रास, दुसऱ्याला दुसऱ्या प्रकारचा तर तिसऱ्याला आणखीन वेगळ्या प्रकारचा त्रास. जर आपल्याला सामूहिकतेमध्ये हे काम करायचे असेल तर एकाच वेळी सर्वांना हा साक्षात्काराचा अनुभव यायला पाहिजे.

हे सामूहिक चेतनेचे आणि जागृतीचे कार्य अशा तऱ्हेने यशस्वी करण्यासाठी मला खूप ध्यान व चिंतन करावे लागले. माझी कुंडलिनी मला सगळीकडे वळवावी लागली. माझ्या कुंडलिनीची कृपा दुसऱ्यांवर केंद्रित करावी लागली आणि मी हे काय करित आहे हे कोणालाच माहीत नव्हते. माझ्यापाशी काय काय शक्ती आहे, मी कोण आहे, हे कोणालाच, माझ्या कुटुंबातील पण कोणाला माहीत नव्हते. मी कोणाला ते सांगितले पण नाही कारण मानवी बुद्धीला त्याचे आकलन होणे अवघड होते. प्रत्येकजण स्वतःच्या अहंकारात अडकलेला होता. मग हे कोणाला सांगणार? कबीराने म्हटलेच आहे, 'सर्व जग आंधळे असतांना त्यांना मी कसे सांगणार?' जग आंधळे नव्हे तर अज्ञानी आहे. मग हे सूक्ष्म ज्ञान मी लोकांना कसे देणार? पण त्या म्हातऱ्या बाईची कुंडलिनी जागृत झाल्यावर तिच्यामध्ये एक सूक्ष्म शक्ती आल्याचे मला दिसले आणि त्या शक्तीद्वारे ती मला समजू लागली. त्याने तर आणखी बारा जणांना जागृती मिळाली. या साक्षात्कारानंतर त्यांचे डोळे चमकू लागले व ते सर्व काही पाहू लागले याचं मला आश्चर्य वाटले. त्यांच्यामध्ये असा एक अनुभव घटित झाला, की त्यातून ते समजू लागले. या पहिल्या बारा जणांच्या सर्व चक्रावर मी काम केले कारण हा पाया मजबूत बनायला हवा होता. मला हे करतांना खूप त्रास झाला कारण एकदा कुंडलिनीचे जागरण झाल्यावर ती योग्य तऱ्हेने वर येण्यासाठी ध्यान आणि चिंतन करणे जरूरीचे आहे. त्याशिवाय ती कार्यान्वित होत नाही.

हे बारा लोक वेगवेगळ्या प्रवृत्तीचे होते आणि त्यांना एकत्र बसून आत्मप्रकाशात आणणे हे काम सुई-दोरा घेऊन त्यात एक-एक फूल घालून हार बनवण्यासारखे आहे. त्यांना सामूहिकपणे एकत्र कसे आणायचे. या बारा जणांच्या भिन्न प्रकृती धर्मांना एका दोऱ्यामध्ये कसे एकत्र करायचे? पण त्यांना साक्षात्कार मिळाल्यावर हा एकजिनसीपणा त्यांच्यात हळू-हळू निर्माण झाल्याचे मला दिसले. पण सामान्य माणसांच्या समूहाला हे सांगणे सोपे नव्हते. मग त्यांनी कोवासजी जहांगीर हॉलमध्ये एक कार्यक्रम जमवून आणला. त्यावेळी मी प्रत्येकाला या पृथ्वीवर राक्षस कसे जन्माला आले आहेत व ते काय करणार आहेत हे सांगितले. मग सर्वजण घाबरून गेले. ते म्हणू लागले, 'माताजी, जर असे म्हणू लागल्या तर कोणीतरी त्यांना ठार मारेल.' प्रत्येकजण म्हणाला, 'हे सगळे उघडपणे सांगू नका, उगीच नको ते प्रश्न येतील.' मी म्हणाले, 'अजापर्यंत मला मारून टाकणारा कोणी जन्माला आला नाही, उगीच काळजी करू नका.'

मी त्यांना माझ्या कुंडलिनीवर ध्यान करा म्हणजे ताबडतोब निर्विचारिता येईल असे सांगितले. निर्विचार



अवस्थेत आल्यावरच ते माझ्या साक्षात स्वरूपाशी एकरूप होणार. हळूहळू ही निर्विचारिता वाढली आणि एका नव्या सामूहिकतेचा प्रकाश पडू लागला. कोवासजी जहांगीर हॉलमध्ये माझ्या लक्षात आले की भारतीय लोकांना त्यांच्या पूर्वजन्मीच्या पुण्यकर्मांमुळेच भारतात जन्म मिळाला आहे. भारतात हे कार्य करायला मुळीच त्रास पडला नाही. ते लोक पटकन जागृत व्हायचे. सुरुवातीला थोडासा त्रास झाला, पण पाश्चात्य लोकांना जागृती देता देता माझे हात मोडून जायचे. एखाद्याची कुंडलिनी वर आणणे हे डोंगर उचलण्यासारखे असते, कारण ती परत परत खाली यायची. आणखी सामूहिकतेतून हे काम करणे जास्तच अवघड व्हायचे, ते विचित्र व मूर्खासारखे प्रश्न विचारत असत, त्यांची उत्तरे दिल्यावर या बाईला इतकं कसं ठाऊक ह्याचे त्यांना आश्चर्य वाटायचे. सारखी माझीच परीक्षा ते घ्यायचे. कारण त्यांना खूप अहंकार आहे. लंडनमध्ये पहिल्या वेळी सात सहजयोगी झाले. ते सातहीजण मादक औषधे पिणारे हिप्पी होते, पण नंतर सहजयोगी झाले. सहजयोगात आल्यावर त्यांची व्यसने सुटली म्हणून मला ते आधार मानू लागले. अशा व्यसनी लोकांना सरळ करणे सोपे नव्हते. एका परीने हे चांगलेच झाले कारण हे काम करतांना मला जे कष्ट पडले त्यातून मला हे समजून आले, की माणूस कितीही वाईट असला तरी त्याला जर शुद्ध इच्छा असेल तर हे शुद्ध ज्ञान मिळून पटकन जागृती मिळू शकते. अंतःकरणापासून आत्मसाक्षात्कार मिळण्याची इच्छा ठेवा असे मी सगळ्यांना सांगत असे. तरच त्यांना जागृती मिळण्याची शक्यता असते. रशिया, उक्रेन, रुमानिया वगैरे वेगवेगळ्या देशांमध्ये मला निरनिराळे अनुभव आले. या देशांचे आपल्या देशाबरोबर पूर्वी कधीतरी संबंध असले पाहिजेत. मच्छिंद्रनाथ, गोरखनाथ वगैरे नाथपंथी तिकडे गेले असावेत; कारण मला तिथे गेल्यावर समजले, की या लोकांना शंभरावर वर्षांपासून कुंडलिनीची माहिती आहे. मग मला ह्या लोकांना इतकी लवकर जागृती कशी मिळू शकते हे समजून आले.

नाथपंथीयांनी महाराष्ट्रातही खूप काम केले, मीसुद्धा करीत आहे, पण दुर्दैवाची गोष्ट ही, की उत्तर भारतात मी जितके यश मिळवू शकले तितके महाराष्ट्रात मला मिळाले नाही. ह्या महाराष्ट्रीय लोकांना नाथपंथी लोक आणि त्यांचे कार्य चांगले माहीत आहे. साधुसंतांनी इथे खूपच काम केले आहे तरी असं का मला समजत नाही. उत्तर भारतासारखा या महाराष्ट्रात सहजयोग लवकर प्रस्थापित झाला नाही. याला काय कारण असावे? मला वाटते, की लोकांना एखाद्या गोष्टीबद्दल आधीच सारे काही माहीत असले तर ते त्याबद्दल अनास्था दाखवतात. संस्कृतमध्ये एक म्हण अशी आहे, की तुम्ही एखाद्या ठिकाणी किंवा व्यक्तीकडे वरचेवर जाता तेव्हा तुमच्याबद्दल अनादर निर्माण होतो. मग तुम्हाला पहिल्यासारखा मान मिळत नाही. प्रयागमधले लोक त्रिवेणीमध्ये स्नान करण्याऐवजी आपापल्या घरात स्नान करतात, तर जगातले ठिकठिकाणचे लोक तिथे येऊन पूजा करून स्नान करतात. महाराष्ट्रात सहजयोगांतील पुष्कळ लोक खूप कार्य करणारे आहेत, पण त्यांचे समर्पण कमी पडते. समर्पण म्हणजे सहजयोगी म्हणून आपल्याला जे मिळाले आहे त्या सहजयोग्याच्या स्थितीचा आपण कसा उपयोग करणार? ते काय फक्त आपल्या स्वतःच्या कल्याणासाठी आणि आपल्या अडचणी दूर होण्यासाठी, आपल्या कुटुंबाच्या भल्यासाठी आहे, की सर्व जगासाठी?

सर्वप्रथम तुम्ही काय केले पाहिजे, तर ध्यानामध्ये गहनता मिळवली पाहिजे. गहनतेमध्येच तुम्हाला वाटू लागेल, की हा आनंद स्वतःसाठीच न ठेवता दुसऱ्यांनाही पण वाटावा; त्याच्यापेक्षा श्रेष्ठ दुसरे काही नाही. मग



इतर कशाचेही भान रहात नाही. हे झाल्यावरच सहजयोग वाढतो व बळावतो ; रात्रंदिवस त्याच्याच ध्यास लागतो आणि त्याचा आनंद उपभोगतो. आजकाल महाराष्ट्रामध्ये पैशाला फार महत्त्व आले आहे. सकाळी चार वाजता उठून ध्यान वगैरे करतात, पण ते यांत्रिकपणे होते. खरं म्हणजे ते हृदयापासून व्हायला हवे आणि त्यात भक्ती हवी. या भक्तीभावनेचा प्रसार करा ; महाराष्ट्रीयन लोकांनी हेच केले पाहिजे.

मी हे सर्व माझ्या हयातीत पाहू शकेन असं मला वाटले नव्हते. हे सारे कुंडलिनीचे महात्म्य आणि परम चैतन्याचे कार्य झाले आहे. हे परम चैतन्य क्षणांत कसा चमत्कार करते याचे मलाच आश्चर्य वाटते. ही शक्ती माझ्याजवळ असली तरी हे परम चैतन्य माझी वेगवेगळी रूपे दाखवीत आहे. तऱ्हेतऱ्हेचे चमत्कार घडवीत आहे. जसे मेक्सिकोमध्ये, यूनोमध्ये नोकरी करणाऱ्या एका महिलेला जागृती मिळाली ; तिचा मुलगा फार आजारी असल्याचे तिने मला पत्रातून कळविले ; तिच्या घराण्यात मुलांना म्हातारपणाचे रोग/आजार व्हायचे. या मुलाला तोच आजार होता. तिने मला तीन पत्रे पाठवली आणि चौथ्या पत्रात तो स्वतःहूनच बरा झाल्याचे कळविले. हे परम चैतन्याचे कार्य आहे आणि त्या परम चैतन्याहून मोठा डॉक्टर कोणी नाही ; त्याचे कार्य म्हणजे कमालीचे आश्चर्य असते. पुष्कळ लोकांना असे बरेच चमत्काराचे अनुभव आले आहेत कारण हे परम चैतन्य आता कृपाशीर्वादाने भरलेले आहे. सगळीकडे हे आशीर्वाद तुम्हाला मिळणार आहेत. ते तुम्हाला प्रेम, शांती देईल आणि तुमची सर्व प्रकारे काळजी घेईल. हे सगळीकडे होतेच पण आता त्याच्या हालचालींमध्ये खूप वेग आला आहे. नुकताच अमेरिकेमध्ये एका मोठ्या हॉलमध्ये मोठा प्रोग्राम झाला तेव्हा लोकांना बसायला जागा नव्हती ; पण पाच मिनिटांत सर्वांना जागृती मिळाली ; ते सुद्धा लॉस एंजिलीससारख्या ठिकाणी. मी जिथे जिथे गेले, तिथे तिथे लोकांना पाच मिनिटात जागृती मिळाली. सर्व काही आश्चर्यजनकच. परम चैतन्याचे कार्य इतके वाढले आहे आणि इतक्या वेगवेगळ्या प्रकारे चालले आहे की ते सामान्य माणसाला समजणार नाही. एकाने माझा फोटो घेतला आणि त्याला इच्छा झाली, की देवीच्या रूपात तिच्या पायामध्ये चंद्र व डोक्यामध्ये सूर्य आहे असं सांगितल्याप्रमाणे हा फोटो यावा आणि खरोखरच तसाच फोटो आला. तुम्ही लोक जी इच्छा कराल ते होणार आहे. आणखी काय सांगायचे ? परम चैतन्याची ही शक्ती अगाध आहे आणि इतकी सक्षम आहे, की त्याला तुमचे सारे प्रश्न, आजार इ. माहीत असतात व प्रेमाने व हळूवारपणे ती सर्व ठीक करते. तुम्ही आदिशक्तीची पूजा करता त्याचक्षणी या परम चैतन्याची (रूह) पूजा करता. ही शक्ती आता इतकी कार्यरत आहे, की लोकांनी आता या जगामध्ये परिवर्तन घडविण्यास विलंब करू नये. जे पुढे येऊन हे कार्य करायला हातभार लावतील त्यांचा फायदा होणार आहे. ही शक्ती किती काय काय करते ? तिच्यामुळेच तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार झाला आहे. तिचा तुम्ही उपयोग करू लागलात, की तुम्हाला अशक्य असं काही नाही. कोणी तुम्हाला त्रास देत असेल तर त्याला बंधन द्या. जे काही काम तुम्हाला करायचं असेल त्यालाही बंधन द्या. बंधनात असल्यावर तुम्ही काय करता ? तुमच्याकडून जी शक्ती वाहत असते ती तुम्ही बांधून ठेवता आणि मग तुमचे जे काम असेल, जे प्रश्न असतील त्यांना बंधन देता. ही शक्ती आता तुमच्याजवळ आहे आणि तुम्ही शक्तिशाली झाला आहात. या शक्तीचा वापर करून तुम्ही कोठपर्यंत जाऊन पोहचू शकाल मलाच माहीत नाही.

परमेश्वराचे तुम्हा सर्वांना अनंत आशीर्वाद !